topic 70

नाम धातु – १

सुप आत्मन: क्यच् ।

इषिकर्मण एषितु: सम्बन्धिन: सुबन्तादिच्छायामर्थे क्यच् प्रत्ययो वा स्यात् ।

इच्छा – अर्थ में स्व- सम्बन्धी इच्छा के सुबन्त कर्म के बाद विकल्प से 'क्यच्' आता है। इच्छा का सुबन्त कर्म अपने से सम्बन्धित होना चाहिए। अन्यथा 'क्यच्' प्रत्यय नहीं होगा। उदाहरण के लिए 'परस्य पुत्रमिच्छति' में यद्यपि इच्छा का कर्म 'पुत्रम्' सुबन्त है, किन्तु उसका सम्बन्ध अपने से न होकर दूसरे से है, अत: यहाँ पर 'क्यच्' का प्रयोग नहीं होगा। तात्पर्य यह है कि जब इच्छा का कर्म इच्छा - कर्ता से सम्बन्धित रहता है, तभी इच्छा अर्थ में सुबन्त कर्म के बाद 'क्यच्' आता है। उदाहरण के लिए आत्मन: पुत्रमिच्छति में इच्छा के कर्म (पुत्रम् का सम्बन्ध इच्छा के कर्ता से है। 'पुत्रम्' रूप सुबन्त है, क्योंकि यहाँ 'पुत्र' से सुप 'अम्' होकर यह रूप बना है। अत: प्रकृत सूत्र से इच्छा के अर्थ में इसके बाद क्यच्' प्रत्यय आता है। 'क्यच्' से ककार और चकार इत्संज्ञक है, अत: 'पुत्र अम्' के बाद केवल 'य' होकर 'पुत्र अम् य' रूप बनता है। सनाद्यन्ता धातव: से 'पुत्र अम्' को धातु संज्ञा होने पर आगे के सूत्र प्रवृत्त होता है।

सुपो धातुप्रातिपदिकयो: ।

एतयोरवयवस्य सुपो लुक् ।

क्यचि च ।

अवर्णस्य ईः । आत्मनः पुत्रमिच्छति - पुत्रीयति ।

नः क्ये ।

क्यचि क्यङि च नान्तमेव पदं नान्यत् । नलोपः - राजीयति । नान्तमेवेति किम् - वाच्यति । हलि च । गीर्यति । पूर्यति । 'धातोरित्येव' । नेह - देवमिच्छति दिव्यति ।

हलः परयोः क्यच्क्यङोर्लोपो वार्धधातुके । 'आदेः परस्य' । 'अतो लोपः' । तस्य स्थानिवत्त्वाल्लघूपधगुणो न । समिधिता - समिध्यिता ।